بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्बः जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 13 फ़रवरी 2026, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, यू.के.
(तबलीग़ महीने की तिथि 13,1405 हश)

आँहज़रत ﷺ के गुलाम-ए-सादिक़ की इबादत-ए–इलाही का ईमान को बढ़ाने वाला तज़्किरा (वर्णन)।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba-13.02.2026
محلہ احمدیہ قادیان،پنجاب،143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ۔

तशहहुद, तअव्वुज़ और सूरह अल-फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहू तआला बिनसृहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- आँहज़रत ﷺ के उस्वे पर सबसे ज़्यादा चलने के नज़ारे हमें इस ज़माने में आप स. के गुलामे सादिक़ हज़रत मसीह मौऊद अलै. में नज़र आते हैं। आंहज़रत ﷺ की इबादत और इस हवाले से नसीहतें इत्यादि पिछले खुतबे में बयान की गई हैं।

आज मैं हज़रत मसीह मौऊद अलै. की इबादत के वे वाकियात पेश करूंगा जो हमें आँहज़ूर ﷺ के इत्तिबा (अनुसरण) में नज़र आते हैं।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. रिवायत करते हैं कि हज़रत मिर्ज़ा मुहम्मद दीन साहब रज़ी. ने इन्हें ख़त भेजा कि मैं अपने बचपन से हज़रत मसीह मौऊद को देखता आया हूं और सबसे पहले मैंने आप अलै. को हजरत मिर्जा गुलाम मुर्तज़ा साहब की जिंदगी में देखा था, जब मैं बिल्कुल बच्चा था। आपकी आदत थी कि रात को ईशा के बाद जल्दी सो जाते और रात एक बजे के करीब तहज्जुद के लिए उठ जाते। तहज्जुद पढ़ कर तिलावत करते रहते, जब सुबह

की अज़ान होती है तो नमाज के लिए मस्जिद में जाते हैं और जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ते हैं। कभी नमाज़ ख़ुद पढ़ाते, कभी मियां जान मोहम्मद, इमाम मस्जिद, जमाअत करवाते। मैंने आप अलै. को मस्जिद में सुन्नत नमाज़ पढ़ते नहीं देखा।

हज़रत मसीह मौऊद अलै. फ़रमाते हैं कि मैंने मैंने कभी कठिन रियाज़तें भी नहीं कीं और न ही कुछ सूफ़ियों की तरह अपने नफ़्स को भारी मुजाहिदों में डाला। ना कभी गोशा नशीनी (एकांतवास) का पालन करते हुए चिल्ला-कशी की, और ना ही सुन्नत के खिलाफ़ कोई ऐसा रहबानियत (सन्यास) वाला अमल किया जिस पर ख़ुदाए तआला के कलाम को एतराज़ हो।

हुज़ूरे अनवर अय्यदाहुल्लाहु तआला ने फ़रमाया: हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने अपने वालिद साहिब की वफ़ात के ज़माने में अपनी रियाज़त (घोर तपस्स्या) का एक वाकिया बयान फ़रमाया है, जिसमें आप अलै. ने एक बुज़ुर्ग को ख़्वाब में देखा है। उन्होंने यह जिक्र किया कि कितने रोज़े रखना अनवार-ए-समावी (आसमानी नूरे हिदायत) की पेशवाई के लिए सुन्नत-ए-खानदान-ए-नुबुव्वत है। हुज़ूर अलै. फ़रमाते हैं कि तब मैंने कुछ समय तक रोज़ा रखना मुनासिब समझा और साथ ही इस विचार से कि इस अमल को गुप्त रूप से करना बेहतर है, आपने यह तरीक़ा किया कि घर से मरदाना बैठक में खाना मंगवाते और उसे कुछ अनाथ बच्चों को बांट देते। हुज़ूर फरमाते हैं कि अल्लाह तआला के सिवा किसी को इन रोजों की ख़बर न थी। फिर दो-तीन सप्ताह बाद आप अलै. ने अपना भोजन और कम कर दिया और पूरे दिन में केवल एक रोटी तक सीमित भोजन लिया। फिर खाने को और कम करते-करते इस हद तक ले आए कि दो-तीन महीने का बच्चा भी उस पर सब्र नहीं कर सकता। आप अलै. ने आठ-नौ महीने तक इस तरह रोज़े रखे।

उस समय रोज़े के अजायबात (चमत्कारों) में से बहुत सी बातें आपके तजरबे (अनुभव) में आईं। आप अलै. ने फ़रमाया कि इन रोज़ों में कई नबियों और औलिया से मुलाक़ातें हुईं। आपने फरमाया कि एक बार पूरी बेदारी (जागे हुए) में रसूलुल्लाह ﷺ को हज़रत हसन रज़ी, हज़रत हुसैन रज़ी व हज़रत अली रज़ी.और हज़रत फ़ातिमा रज़ी. के साथ देखा और यह कोई सपना नहीं था, बल्कि बेदारी की एक विशेष अवस्था थी।

हुज़ूर अनवर ने अपने ख़ुत्बे में आगे फ़रमाया: एक रिवायत में बताया है कि एक बार हुज़ूर अलै. छत से गिर पड़े। जब होश आया तो पूछा: "क्या नमाज़ का समय हो गया है या नहीं?" यानि आपको नमाज़ से इस कद्र मुहब्बत थी। सन् 1895 में हज़रत मीर मोहम्मद इस्माइल साहब रज़ी. को माह-ए-रमज़ान कादियान में गुज़ारने का मौक़ा मिला तो उन्होंने नमाज़-ए-तहज्जुद यानी तरावीह की नमाज़ हुज़ूर के पीछे अदा की। वे बयान देते हैं कि हुज़ूर

अलै. वित्र की नमाज़ रात के पहले भाग में पढ़ लेते थे और तरावीह की नमाज़ दो-दो रकअत करके रात के अंतिम भाग में अदा करते।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी, हज़रत अम्मा जान रज़ी. से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर अलै. पाँचों नमाज़ों के अतिरिक्त दो प्रकार के नफ़्ल पढ़ा करते थे। एक नमाज़-ए-इशराक, जिसे आप कभी-कभी पढ़ते थे। दूसरी नमाज़-ए-तहज्जुद आठ रकअत, जो आप अलै. हमेशा पढ़ा करते, सिवाए इसके कि आप अलै. ज़्यादा बीमार हों। ऐसी स्थिति में भी आप अलै. बिस्तर पर लेटे-लेटे ही दुआ कर लेते थे। आखिरी उम्र में कमज़ोरी के कारण बैठ कर दुआ किया करते।

हज़रत मौलवी याक़ूब अली साहब रज़ी. कहते हैं कि जब हुज़ूर अलै. मुक़दमों की पैरवी के लिए जाते, केवल अपने वालिद साहिब के (मुक़दमे) की पैरवी में। वहां भी आप अलै. इस बात का विशेष ध्यान रखते कि कोई नमाज़ कज़ा न हो।

हज़रत मसीह मौऊद की आवाज़ में बहुत सोज़ (करुणा) और दर्द था। आप अलै. की क़िरात (क़ुरआन पढ़ने का अंदाज़) लहरदार और प्रभावशाली थी। क़ुरआन करीम और सुन्नत-ए-रसूल ﷺ से आपको गहरा प्रेम था। आप अलै. की इबादतें कभी भी रसूल ﷺ की पैरवी से आगे नहीं बढ़ती थी। नमाज़ के अतिरिक्त आपका दैनिक वज़ीफ़ा कुरआन करीम की तिलावत, दरूद शरीफ़ और इस्तिग़फ़ार था। कुरआन से तो आप अलै. को इश्क़ (विशेष प्रेम) था, दिन-रात, उठते-बैठते और टहलते हुए भी क़ुरआन पढ़ा करते और ज़ार ज़ार (लगातार) रोते जाते।

जब हज़रत मसीह मौऊद अलै. मस्जिद में नमाज़ के लिए नहीं जा सकते तो घर में ही जमाअत करवा लेते थे, और ऐसे अवसर पर अकसर हमारी वालीदा को साथ मिला लेते थे।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि हजरत शेख याकूब अली इरफ़ानी साहब रज़ी. आप अलै. के बचपन के बारे में रिवायत करते हैं कि हुज़ूर अलै. अपनी हमउम्र लड़की, जिसके साथ बाद में आपकी शादी भी हुई, उसे दुआ के लिए कहते कि ना मुरादे (अरे नादान!) दुआ कर कि ख़ुदा मेरे नमाज़ नसीब करे। इस वाक्य से पता चलता है कि बहुत बचपन से ही आप अलै. के जज़्बात (भाव, भावनाएं) निहायत (अत्यंत) पाक थे।

हुज़ूर अलै. फ़रमाते हैं: "मैं बचपन से रोज़ा रखने का आदी हूँ.....मैंने (बचपन में) उनतीस रोज़े पूरे रखे, तो उस दिन मेरी ख़ुशी की ईद थी।" रोज़े की खास बरकतें होती हैं। जैसे हर फल का अलग स्वाद होता है, वैसे ही हर इबादत में अलग लज्जत (आनंद) होता है। इन इबादतों में ऐसी रूहानियत होती है जिसे इंसान बयान नहीं कर सकता। चाहिए कि इबादत में इंसान की रूह बेहद कोमल होकर पानी की तरह बह कर ख़ुदा से जा मिले।

हज़रत पीर सिराजुल हक नुमानी साहब रज़ी, मियां जान मोहम्मद साहब मरहूम रज़ी. की नमाज-ए-जनाज़ा के बारे में रिवायत करते हैं कि हुज़ूर अलै. को मरहूम से बहुत प्यार था। हुज़ूर अलै. ने स्वयं नमाज़-ए-जनाज़ा पढ़ाई और नमाज़ में इतनी देर लगी कि नमाजियों के पैर खड़े-खड़े दुखने लगे। मेरा तो खड़े-खड़े बुरा हो गया। जब जनाज़ अदा करके वापस आए तो किसी ने अर्ज़ किया: "हुज़ूर! आज नमाज़ इतनी देर तक हुई कि हम तो थक गए, आप अलै. का भी क्या हाल हुआ होगा?" हुज़ूर अलै. ने फ़रमाया- हमें थकने से क्या काम, हम तो अल्लाह तआला से दुआएं करते थे, उससे इस मरहूम के लिए मग़फ़िरत मांगते थे, मांगने वाला भी कभी थका करता है? जो थक जाता है, वह रह जाता है, हम मांगने वाले हैं और वह देने वाला है, फिर थकना कैसा? जिससे ज़रा सी भी उम्मीद होती है वहां साइल (मांगने वाला) डट जाता है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: अल्लाह ताला हमें भी ऐसी ही सोच के साथ नमाज़ अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। हमने तो हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलै. की बैअत ही इस शर्त के साथ की है कि नमाजें ख़ुदा और उसके रसूल ﷺ के हुकुम के अनुसार ही अदा करेंगे। अल्लाह तआला हमें इस अहद (वचन) को भी निभाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

खुतबे के अंत में हुज़ूर अनवर ने दो मरहूमीन का ज़िक्र-ए-खैर फ़रमाया और उनकी नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब पढ़ाने का इरशाद फ़रमाया और उनके लिए मगफिरत और दर्जात की बुलंदी के लिए दुआ की।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक-9781831652
टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात,पंजाब- 18001032131